TOUCHING KṚṢṆA

Are you touching Kṛṣṇa..?

Are you touching Kṛṣṇa..?

This is the question which needs to be asked,

if you are not happy!

यदि आप खुश नहीं हैं..., कब-कब? एक (१) हफ्ते में सात (७) दिन, एक दिन में चौबीस (२४) घण्टे और हर घण्टे में साठ (६०) minute और हर minute में साठ second, यदि हम खुश नहीं हैं, तो यह प्रश्न हम को अपने आप से करना है, "Am I touching Kṛṣṇa? क्या मैं कृष्ण को छू रहा हूँ?" कृष्ण को जो व्यक्ति छू रहा है, वह दुःखी नहीं हो सकता। और जो कृष्ण को छू नहीं रहा, वह सुखी कभी नहीं हो सकता।

प्रत्येक क्षण, कृष्ण को छूना, यह ही भक्ति है। क्यों छुएँ कृष्ण को? कृष्ण क्या हैं?

आनन्द स्वरूप...,

सच्चिदानन्द ब्रह्म...,

विज्ञानम् आनन्दं ब्रह्म (बृहदारण्यक उपनिषद् - ३.९.२८)

एषः हि एव आनन्द दायति (ब्रह्माण्ड वल्ली)

वेद कहते हैं। हाँ, वे आनन्द देते हैं। वे आनन्द स्वरूप हैं, आनन्द देते हैं। Touching Kṛṣṇa means soul getting happiness. Who is touching Kṛṣṇa? मिट्टी? यह चमड़े का शरीर is touching Kṛṣṇa ? No! Can चमड़े का शरीर touch Kṛṣṇa? No! You can touch Kṛṣṇa. You must touch Kṛṣṇa, क्योंकि यदि आप कृष्ण को नहीं छू रहे, तो दुःख को छू रहे हो, माया को छू रहे हो, असत्संग कर रहे हो।

क्या चाहते हैं हम दिनभर? दिनभर क्या चाहते हैं? जीवनभर क्या चाहते हैं? रोज़ क्या चाहते हैं? हर क्षण क्या चाहते हैं? इसका मतलब है, You want to touch Kṛṣṇa! You want Kṛṣṇa, and without touching Kṛṣṇa, you can never be happy... आनन्द चाहते हो, इसका मतलब you want to touch Kṛṣṇa.

यह प्रश्न हमें अपने आप से नहीं पूछना कि am I touching Kṛṣṇa, यदि हम निरंतर खुश हैं। क्यों? क्योंकि फिर आपके सारे प्रश्नों का समाधान हो चुका है। अब तो आप आनन्द

में आ गए। जब तक एक क्षण भी दुःखी हैं, तो यह प्रश्न अपने आप से पूछना पड़ेगा, पूछना ही पड़ेगा कि, 'Why I am not touching Kṛṣṇa?' समाधान तो उसी में है, you have to touch Kṛṣṇa somehow. और how we have to touch, कैसे करना है हमें touch Kṛṣṇa को? कैसे? अपने मन से, अपनी वाणी से, अपने gesture से, touching Kṛṣṇa. कैसे हम कृष्ण को touch कर सकते हैं?,

"भक्तिर् एवैनं नयति, भक्तिर् एवैनं दर्शयति।
भक्तिवशः पुरुषो, भक्तिर् एव भूयसी।।"
(माथर श्रुति, माध्वभाष्य, वेदांत सूत्र ३.३.५३)

भक्ति से ही कृष्ण वश होते हैं, भक्ति ही वो आनन्द है, भक्ति ही वो आँखें हैं जिसमें हम कृष्ण को देख सकते हैं। भक्ति ही वो तरीका है जिससे हम कृष्ण को छू सकते हैं।

और भक्ति कोई, कोई माला करने की विधि, माला करने को केवल भक्ति नहीं बोलते। हम दिनभर के क्रिया-कलाप जो हैं, क्या हमारी वाणी से, क्या हमारे मन की सोच से, are we touching Kṛṣṇa? Touching Kṛṣṇa, मतलब क्या होता है? How can you touch Kṛṣṇa? कृष्ण को केवल सेवा से छू सकते हो।

सेवा कैसी?

कैसी बच्चे?

सेवा ऐसी, जो उनकी मनोमयी है।

What really..., when something really pleases Kṛṣṇa, He gets happy, उन्हें खुशी मिलती है जब उन्हें, जब किसी की मनोमयी सेवा करोगे, तो उसे खुशी मिलेगी कि नहीं मिलेगी? अब आप कहोगे कि भाई, मनोमयी तो पता नहीं क्या है? वाणीमयी सेवा ही..., बोल दो तो तो समझ जाएँ। मन की बात तो समझना गुरु की या भगवान् की वो बहुत उच्च स्तर की बात है। वो बालकों का काम नहीं है। पर बोली हुई बात तो समझ जाएँ।

यह जो ग्रन्थ है भगवद् गीता, यह तो वाणी है। मनोमयी तो अभी...। वाणी की basic बातें तो follow करें। भगवान् ने बोल तो दिया, क्या बोला भगवान् ने? कैसे हम भगवान् को छू सकते हैं? बताइए, कैसे छू सकते हैं? भगवान् की वाणी को छूना मतलब? भगवान् अपनी वाणी से भिन्न थोड़ी न हैं वो। अभिन्न हैं, non-different हैं। गीता भगवान् की वाणी है। भागवत् भगवान् का स्वरूप है। अपनी वाणी से अभिन्न हैं वो। अब

गीता में क्या बताया जा रहा है? कैसे छुओ कृष्ण को? कभी किसी को किसी कार्य करने के लिए pressure मत करो, १८.६३ क्या है?

"इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु।।"

(गीता-१८.६३)

ज्ञान सारा दे दो, वो भी कब? ध्यान दें, कब? अपनी मर्ज़ी से? नहीं। ४.११ follow करना है,

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।"

(गीता-४.११)

जब कोई पूछे तब बता सकते हैं..., अपना opinion मत force करो। न बच्चे पर, न किसी भक्त पर, न परिवार वाले पर। १८.६३ follow हो ही नहीं सकता ४.११ किए बिना। फिर..., यह आप तभी कर पाओगे जब २.४७ follow करोगे। यह क्या होता है?

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।"

(गीता- २.४७)

कर्मण्येव, एव अधिकारस्ते, अधिकारस्ते..., कर्म करने का अधिकार है, कौन सा कर्म? अनासक्त कर्म। अनासक्त मतलब केवल कृष्ण की प्रसन्नता के लिए करना। अपने अहम् की तुष्टि के लिए नहीं।

और कभी स्वप्न में भी किसी भक्त के दोष का स्मरण न हो। अदोषदर्शी। स्वप्न में भी किसी भक्त के दोष का स्मरण न हो। और..., और कैसे? और ***चित्त ते करिया एकया*** करके गुरु के साथ।

"गुरु मुखपद्मवाक्य, चित्त ते करिया एकया, आर ना करिह मने आशा।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से उत्तम गति, जे प्रसादे पूरे सर्व आशा।।"

(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ४ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

यह है Touching Kṛṣṇa!! यह नहीं कर रहे, अच्छा, *चित्त ते करिया एकया* किस-किस क्षेत्र में? आप अपने बारे में जो सोचते हो, वो भी आप खुद मत सोचो..., गुरु क्या सोचते हैं आपके बारे में। किसी भक्त के बारे में आप मत सोचो कैसा है वह..., सही है या गलत है। वो गुरु का क्या मत है उसके बारे में। आपके मत की क्या value है? और परिस्थिति के बारे में, गुरु का दृष्टिकोण क्या है? हमारा दृष्टिकोण क्या है? अगर हमारा एक है, तो we are touching Kṛṣṇa, नहीं तो हम..., we are touching māyā! हम असत्संग कर रहे हैं।

और बहुत ही महत्वपूर्ण बात - A devotee never argues. भक्त..., भागवत् में बताया गया है, "भक्त कभी किसी से विवाद नहीं करता", सामान्य व्यक्ति से भी विवाद नहीं करता, रिक्शा वाला से भी। और हम किसी भक्त से विवाद कर रहें हैं, Argument..., तो we are not touching Kṛṣṇa.

देखिए, हर क्षण...,

Either we are touching Kṛṣṇa...!

or

We are touching our patterns...!

Pattern समझते हो? विचारधारा। यह तो बात है न, मनोमयी सेवा तो देखा आप हर क्षण करोगे। प्रश्न यह है कि गुरु की, गौरांग की मनोमयी या अपनी मनोमयी। प्रश्न तो यही है सारा। करोगे तो आप मनोमयी। आप मनोमयी सेवा किये बिना रह नहीं सकते एक क्षण। मनोमयी सेवा तो करनी ही पड़ेगी। और किस के मन की करोगे? गुरु की, गौरांग की, कि अपने मन की? मनोमयी सेवा तो करनी ही पड़ेगी, विकल्प नहीं है।

जब हम गुरु के अनुसार एक-एक क्रिया कलाप कर रहे हैं, तो तो we are touching Kṛṣṇa. क्यों? क्योंकि गुरु का हृदय भक्ति महारानी का सिंहासन है। गुरु के हृदय से भक्ति महारानी बैठ कर पूरे जगत को भक्ति बाँटती हैं। भगवद् गीता, अठारहवाँ अध्याय का fifty eight number श्लोक है -

"मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।।"

(गीता- १८.५८)

"मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि"- जो अपना चित्त मुझ में लगाता है, *"मत्प्रसादात्तरिष्यसि"*- वह मेरी कृपा से हर प्रकार के दुःख से तर जाता है। *"अथ चेत्वमहङ्कारान्न"*- अहंकार वश तुम मेरी बात नहीं मानते अगर, *"न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि"*- तुम्हारा विनाश हो जाएगा।

यह गीता के बारे में बताया जा रहा है, कि मेरी बात नहीं मानोगे, भगवान् भी तो बोलें, हमें क्या पता भगवान् क्या बोल रहे हैं। गीता में तो बोल दिया कभी दोष मत देखो। और गुरु से..., गुरु के चित्त से, अपने चित्त से एक रखो, भेद बुद्धि मत रखो। "Surrender means peaceful life"..., तो जब हम यह चीज़ें नहीं करेंगे, then we are not touching Kṛṣṇa.

देखिए, हर क्षण हम आनन्द के लिए कार्य कर रहे हैं। हम कितनी बारी भगवान् से प्रार्थना करते हैं, 'हमारी मन की मुराद पुरी हो जाए।' करते हैं प्रार्थना? इसका क्या मतलब होता है? When the internally conceived matches the externals, इसको हम Happiness की संज्ञा दे देते हैं। मैंने conception करी internally... When the internally conceived matches externally, we label it as happiness! बताइए? If you label something other than Kṛṣṇa as happiness, whose fault is it? किसको हम happiness मानते हैं? मैं बड़ा, मेरे मन की मुराद...What is this ? You were supposed to touch Kṛṣṇa..., आपने Kṛṣṇa को छूना था, तो आप अपने concepts को छू रहे हो, अपने pattern को छू रहे हो।

आपको आनन्द मिला कैसे? बताओ, मन की मुराद..., क्या है वो? इधर देखिए..., छोड़िए copy pencil. यह है आत्मा। ठीक है? यह है मन। यहाँ पर मान लो, यह concept है, just..., just imagine, आत्मा इस concept को..., यह इसका fulfillment है। इसको I-phone चाहिए था, यह I-phone मिल गया, happiness. A B C is equal to happiness. बताइए, इसमें कौन सी बुद्धिमता है?

Soul conceive, internally conceived, getting I-phone as happiness or getting something as happiness and he got that..., इसमें कृष्ण को कैसे छुआ? किसने छुआ? यह तो आपने अपने concept को छुआ। आपके बच्चे ने अच्छी बात कर ली..., क्या हुआ? आपके concept को match कर लिया, इसमें कृष्ण कहाँ हैं? हम देखते हैं दिन भर में, लोग बात करते हैं एक दूसरे से, आप क्यों बोल रहे हो भाई? आप बोलते क्यों हो? आपको बोल के..., are you touching Kṛṣṇa by speaking...? तो क्यों बोलते हो? इतना बोलते हैं, इतना बोलते हैं..., क्यों बोलते हैं?

हम देखें..., लोग खेल खेलते हैं Ground में, आज हम आ रहे थे रास्ते में..., लोग Bat–Ball खेल..., हम सोचते हैं, यह Bat–Ball खेल के are you touching Kṛṣṇa? आपको हँसी आ रही होगी..., हाँ यह तो..., तो आप कैसे कृष्ण को touch कर रहे हो, बताओ? Internally conceived matches the externals, इसमें क्या है touching Kṛṣṇa? We have to touch Kṛṣṇa, यह बात समझ लें। Touching Kṛṣṇa means soul getting happiness, 'I' getting happiness.

एक और बहुत महत्वपूर्ण बात समझ लें -

Having Thoughts is not Thinking...

Having thoughts is not thinking! You know why? Because you are always thinking about happiness, you are always thinking about Kṛṣṇa only. तो having thought is an obstruction to your real thought of getting happiness, your only thought of getting happiness, your only thinking. What do you..., आप कि..., आप किसलिए सोचते हो? किसलिए सोचते हो बच्चे? सुभद्रा बच्चे बोलो, किस लिए सोचते हो?? सुखी रहने के लिए..., ठीक है? एक ही चीज़ चाहते हो - सुखी रहना। I am..., आप सुखी रहना चाहते हो न, मतलब you are thinking about happiness, you are thinking about Kṛṣṇa, but आप thought लाकर खुद barrier डाल लेते हो।

तो Having thoughts is not thinking... Having thoughts is not Kṛṣṇa, your conception about anything is not Kṛṣṇa. You remove your thoughts, you just have to renounce what you don't have and have Kṛṣṇa..., बहुत मुश्किल हो रहा होगा समझना। आपको उस चीज़ का त्याग करना है जो आपके पास नहीं है। मतलब अपनी तृष्णा का। तृष्णा का त्याग करना है आपको। तृष्णा का त्याग करना है। You..., आपके पास जो है, उसे त्यागने के लिए हम नहीं बोल रहे। जो नहीं है..., मतलब की जो सोच रहे हो, कि जो हो जाएगा उससे होकर मुझे खुशी मिलेगी, You just renounce what you don't have and have Kṛṣṇa. Just renounce what you don't have... I am not saying you renounce what you have. आपके एक करोड़ हैं, आप अपने पास रखो। हाँ, जो उसके ऊपर एक करोड़ की और की इच्छा है न, उसको त्याग दो। उसको त्याग के have Kṛṣṇa..., किसी को तो रखोगे न? तो touch Kṛṣṇa.

The whole problem in life is, कि मुझे पता ही नहीं है कि मैं कर क्या रहा हूँ। मुझे पता ही नहीं है मैं कर क्या रहा हूँ। सारी problem ही यही है। इतना बड़ा Identity

Crisis है, कि, 'I' the soul wants happiness, यह एक बात मैं दस (१०) साल से बोल रहा हूँ, पन्द्रह (१५) साल से बोल रहा हूँ, बहुत मुश्किल..., समझ नहीं आती है। 'I' the soul wants happiness, this is it... I want to touch Kṛṣṇa every moment.

You know what you have to do...? Nutshell में...?

Just become Unknown to Yourself...!

Become unknown to yourself ! अब आप अपने आप को भूल जाओ खुद के लिए। जो अपने आप को समझते हो, वो भूल जाओ की कौन हो, क्या हो, क्या नहीं हो, आपकी यह desire है, वो अच्छा है, वो बुरा है। आपको इसमें से कुछ भी नहीं सोचना। क्यों? You want to touch Kṛṣṇa..., यह बात हमने समझनी है सिर्फ। आप कौन हो, क्या हो, क्या करना है आपको, क्या करना है? अरे भाई ! क्या करना है बताओ न? आप कौन हो, क्या हो, क्या करना है, इससे क्या है, इसमें कुछ भी नहीं है। आपके घर में कौन है, आपके घर में कोई..., कुछ हुआ..., आप..., you want to touch Kṛṣṇa, bottom line, front line, सारी यह ही line है।

परन्तु, touching Kṛṣṇa का मतलब पता है क्या है? प्रत्येक क्षण हम follow कर रहे हैं, *"ये यथा माम प्रपद्यन्ते"*, *"यथा इच्छसि तथा कुरु"*, *"कर्मण्येव अधिकारस्ते"*, *"अदोषदर्शी"*, *"निमित्त मात्र"*, *"चित्त ते करिया एकया"*, यह सारी चीजें शास्त्रों मे बताई हैं।

Touching Kṛṣṇa का मतलब पता है क्या है?

सही कार्य करना।

और सही कार्य का क्या मतलब है?

Touching Kṛṣṇa...!

Touching Kṛṣṇa का क्या मतलब है? सही कार्य करना, और सही कार्य का क्या मतलब है? Touching Kṛṣṇa...। हर क्षण Touching Kṛṣṇa माने, हर क्षण..., प्रेममयी सेवा में गुरु-गौरांग की। न अपने thought, न किसी और के thought, कोई मतलब नहीं किसी के thought से। कौन wife, कौन दोस्त, कौन बहन, कौन माँ, कौन मैं..., Become unknown to yourself !!!

अब देखो क्या Psycho drama कर रहे हैं हम अपना। हमें पता ही नहीं है हम कौन हैं। सही कार्य किए बिना you cannot touch Kṛṣṇa और सारे सही कार्य मतलब..., हर क्षण हर चीज़ को follow करना, it is easiest said than done... हमें कोई living भागवत् चाहिए। भागवत् पुरुष जो भागवत् को जीता हो अपने जीवन में, प्रत्येक क्षण जीता हो, ऐसे भागवत् पुरुष का हमें आचरण चाहिए। Living Bhāgavad..., One who is touching Kṛṣṇa every moment can make you touch Kṛṣṇa..., by mere presence.

भागवत् पुस्तक और भागवत् पुरुष यह..., both..., both are forms of Kṛṣṇa. यह दोनों भगवान् के स्वरूप हैं, कृपा करने के लिए। उसमें से भी, भागवत् पुरुष की महा..., परम आवश्यकता है भागवत् को समझने के लिए, भागवत् जीने के लिए। जो भागवत् जी रहें हैं, वे हमें भागवत् जीना सिखा सकता है..., शक्ति है न। *"कृष्ण से तोमार, कृष्ण दिते पारो, तोमार शक्ति आछे"*..., He can also make you touch Kṛṣṇa. अनादि बद्ध जीव क्या करेगा? वह resist नहीं कर सकता अपने आप को by touching his own patterns. वह अपने patterns को ही touch करेगा। फिर वही बीमारी, फिर वही दोष दर्शन, फिर वही wrong attachment.

हम गुरु की सेवा को..., से ज़्यादा हम किसी भी वस्तु से या व्यक्ति से attached हैं, तो इसका मतलब हम माया में हैं, असत्संग कर रहें हैं..., किसी भी व्यक्ति, किसी भी वस्तु से attached हैं। गुरु की सेवा, गुरु की कौन सी सेवा? जो गुरु चाहते हैं? यह नहीं हम अपना कुछ करके उसको label दे दें, यह हम गुरुजी की सेवा कर रहे हैं। न ! सेवा का मतलब ही मनोमयी होता है। सेवा का दूसरा मतलब ही नहीं है। सेवा के दो मतलब नहीं हैं, कि हाँ जैसे हमें ठीक लग रहा है।

हमनें बताया था पिछले प्रवचन में, सेवा का मतलब ही प्रेममयी सेवा होता है। होता क्या है? जैसे ही कोई परिस्थिति आती है, तो हम क्या करते हैं? क्या करते हैं? We react to our own definitions of..., we react to..., we react to our own definitions. मैं इतनी सारी बातें बोल रहा हूँ कि याद ही नहीं रहेंगी आप सब को। We react to our own definitions, कि क्या सही...। किसने definition बनाई सही की? आपने। और react किसने किया? आपने। We react to our own definitions..., समझ रहे हो? We react to our own definitions..., हम प्रतिक्रिया करते हैं अपनी परिभाषाओं..., हम अपनी स्व..., स्वरचित परिभाषाओं के ऊपर। यह सही है, ऐसा होना चाहिए; यह गलत है, ऐसा होना चाहिए..., we react to our own definitions. We forget that, is this for the pleasure of

Kṛṣṇa or Guru? अपनी बनाई हुई परिभाषाएँ..., सही, गलत..., ऐसे होना चाहिए, ऐसे नहीं...। We react to our own definitions.

जब तक किसी महत् पुरुष की कृपा नहीं मिलेगी, उनकी मनोमयी सेवा नहीं करेंगे दिन-रात जब तक..., मनोमयी सेवा करे बिना कृपा तो मिलेगी नहीं। जब तक नहीं करेंगे, तो we can never touch Kṛṣṇa. सम्भव नहीं है।

देखिए, बद्ध जीव जो है न, वह अनादि काल से अपने खराब गलत विचारों के समुद्र में फँसा पड़ा है। Pacific Ocean होता है, बहुत बड़ा Ocean, समुद्र, मतलब बहुत बड़ा समुद्र..., उसे Pacific Ocean कहते हैं। उसके बीच में अगर कोई फँसा हुआ हो, तो उसके चारों ओर क्या होगा? पानी। तो जब भी छुएगा, तो किसको छुएगा? पानी को छुएगा। वही हमारा हाल है, अनादि बद्ध जीव का, कि जब छुएगा अपने pattern को छुएगा, अपने खराब..., करोड़ो-अरबों सालों के खराब thought को। आए..., ऊपर से helicopter आ जाए बचाने के लिए, समुद्र से निकालने के लिए और रस्सी दे दे, तो जब तक वह उस रस्सी को नहीं छू रहा, वह पानी को ही छुएगा। Option ही नहीं है उसके पास दूसरी। तो गुरु की जो वाणी है, वो-वो रस्सी है, एकमात्र रस्सी, एकमात्र..., दो मात्र नहीं, एकमात्र। वो पकड़ेंगे, तो we are touching Kṛṣṇa otherwise अपने thoughts, अपने patterns को ही हम छू रहे हैं। छू रहे है और छूते रहेंगे..., बच भी नहीं पाएँगे।

Touching Kṛṣṇa means -

That activity which truly pleases Guru, truly pleases Kṛṣṇa ! Truly pleases...

That is touching Kṛṣṇa !

अब..., एक अनादि बद्ध जीव को हर क्षण क्या पता होगा कि क्या करना है, क्या नहीं करना, हर परिस्थिति के बारे में? हर..., परिस्थिति के बारे में, अनादि बद्ध जीव को? अनादि बद्ध जीव पता है, होता क्या है? अनादि मतलब पता है क्या होता है? अन्त ही नहीं है बद्धता का। गलत..., गलत thought process का अन्त ही नहीं है। अनादि बद्ध जीव का यह मतलब है, short में हम बताएँ। Wrong thought process का जिसका अन्त न हो, वह है अनादि बद्ध जीव। जो सोचेगा, गलत सोचेगा। समुद्र में है न, Pacific Ocean of thoughts में है, Infinite Ocean of thoughts में है, अनादि है न। जन्म का ही नहीं पता, कब..., अनादि..., beginningless, तो beginningless के अन्दर thoughts

कितने होंगे। Beginningless, वो समुद्र है। एक रस्सी है जो बचा सकती है, नहीं तो हमारे thoughts..., अगर हम किसी के भी thoughts से..., के through जीवन जी रहे हैं, अपने या किसी और के और गुरु के नहीं हैं, तो हम spiritual suicide करने जा रहें हैं। पक्की बात है मर जाओगे, आज नहीं तो कल। किसी के thought से attach हो जाओ, अपने या किसी और के, गुरु के अलावा, छोड़ के। देखो, मर नहीं गए तो। आपकी मृत्यु से आपको कोई नहीं रोक सकता। Spiritual death!!

यह जो हम बोल रहे हैं इसको जीना है, जीएँगे नहीं तो we are not touching Kṛṣṇa, we are touching..., महाप्रभु ने क्या बोला? *"असत्संग त्याग एइ वैष्णव आचार"*, असत्संग त्याग मतलब क्या?? Touch Kṛṣṇa. असत् कौन? जो सत् नहीं है। सत् कौन? कृष्ण। Touch..., Kṛṣṇa...!! महाप्रभु बोल रहे हैं कृष्ण को छुओ। असत् को छोड़ो। असत् क्या होता है? अपने विचार या किसी और के विचार, यह असत्संग है। कृष्ण के विचार, गुरु के विचार, यह सत्संग है। किसी के भी विचार हों, सब असत्संग है। एक if या एक but आ गया, वो असत्संग है।

'असत्संग त्याग', मतलब क्या? कुछ..., सत् को तो पकड़ो। सत् को पकड़ने का मतलब क्या? 'गुरु-गौरांग की प्रेममयी सेवा', इसको छोड़कर सब असत्संग है। जो भी सेवा, तथा-कथित सेवा वो असत्संग था, है और रहेगा। यह सेवा ऐसे नहीं होती जो हम सोचते हैं। सेवा माने ही है मनोमयी..., प्रेममयी। जो वे चाहते हैं वो, न की जो हम चाहते हैं वो। 'असत्संग त्याग' मतलब सबके विचारों को त्याग, अपने और सबके। समझे?

Touch Kṛṣṇa ! अपने action से touch Kṛṣṇa, अपने gestures से touch Kṛṣṇa। जैसे हम कैसे देखते है किसी को, कैसे बोलते हैं। Are we..., are we doing it for the pleasure of Kṛṣṇa? Are we doing for the pleasure of Kṛṣṇa कि नहीं, हाँ या न? न..., तो how are you touching..., how can you be happy? तो खुश कैसे होंगे? कण-कण से छूना है कृष्ण को..., जो है सबसे। हाँ...! भक्ति का मतलब ही है सम्यक् रूप से करना। भक्ति और होती क्या है? आधे-अधूरे रूप से करना? यह कौन सी भक्ति है? न!

अब प्रश्न आता है, कि हाँ भाई भगवत् पुरुष की कृपा हो, वो सब हो तो ठीक है, उनका मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त हो, एक तो निरन्तर बहुत ज़रूरी है। पूछो क्यों? क्योंकि हम हैं बीमार, बीमार को चाहिए औषधि, औषधि है शास्त्र में। यह वाली..., शास्त्र हैं, इसमें कौन सी चीज़ कब क्या करनी है। अब यह तो है नहीं, कि chemist की दुकान

पर गए, 'बीमार हैं...', 'यह दवाई अब आप खाएँगे...', 'नहीं हम यह दवाई खाएँगे'..., ऐसा नहीं है। दवाई तो डॉक्टर बताएगा न, "अब यह खाओ तुम, वो उसको छोड़ दो तुम। यह खाओ, यह मत खाओ", यह कौन बताएगा? यह तो डॉक्टर बताएगा। यह थोड़ी न chemist की दुकान पर गए, हाँ, हमने भी शास्त्र पढ़े हैं, हमें भी चार-छः साल हो गए हैं भक्ति करते हुए।

देखो जो मुक्त पुरुष होते हैं..., महत् पुरुष होते हैं..., वे अपने आनन्द में लीन रहते हैं। उनके पास समय नहीं होता कोई चीज़ के लिए। तो किसी भी महत् पुरुष से बात करने को मिल जाए, यह तो जीव का सबसे बड़ा सौभाग्य है। मार्गदर्शन मिलना, यह सामान्यतः मिल ही नहीं सकता। तो हमने तो जो आज तक देखा है जो..., कि महत् पुरुष के आस-पास जो भी लोग होते हैं, वे उनमें से किसी..., अपने से जितने भी जुड़े हुए भक्त हैं उनको किसी न किसी से जोड़ देते हैं..., उस समय के अनुसार जो भी भक्त आस-पास हैं, उनसे जोड़ देते हैं। किसी तरह वह महत् पुरुष से जुड़े रहें, उनकी कृपा प्राप्त होती रहे। जिसको आप guide बोल लो, mentor बोल लो, कुछ भी बोल लो। उस समय के अनुसार जो भी Best Devotee available कोई भी, उस समय के अनुसार जो भी available Devotee!

"जन्मे-जन्मे प्रभु सेई", यह गुरु के लिए कहा गया है। जन्मे-जन्मे कोई और भक्त के लिए नहीं कहा गया। जो भी available devotee कोई भी हों, उस समय के लिए, कि हाँ यह कर सकते है कार्य, वही mentor कह लो, कुछ भी कह लो। mentor और गुरु में यह ही भेद है, जो ज़मीन और आसमान में है। ज़मीन और आसमान में जो भेद है, वही mentor और गुरु में भेद है। वात्सल्य-सिंधु गुरु हैं, प्रेमसिन्धु, वे..., कोई सामान्य भक्त नहीं होता। यह बात हमें एकदम अच्छी तरह समझनी चाहिए। गुरु या कोई भी महत् पुरुष के पास इतना समय ही नहीं होता, वे जो भी available Devotee में से उस समय के लिए best for you है, वो बता देते हैं। और mentor या कोई भी व्यक्ति हो उसका एक ही धर्म है- to radiate Guru's emotions!

"चित्त ते करिया एकया", अगर तीनों स्तर पर नहीं है..., तो mentor का धर्म ही एक है सिर्फ, या जो भी व्यक्ति guide है। हर प्रकार से, *"चित्त ते करिया एकया"* और सिर्फ वही flow कर रहा है। Mentor का मतलब pipe! Pipe..., नलका। जैसे MCD का नलका होता है, जब भी आप MCD का नलका खोलोगे, तो आप क्या expect करोगे, उसमें क्या आना चाहिए? Government का पानी। आप यह नहीं सोचोगे किसी और का पानी आएगा। आप जब नलका on कर रहे हो, आप निश्चिन्त होगे की government का

पानी आएगा। अगर कोई और अगर पानी..., मतलब की..., जो नलका है, वो केवल government की चीज़ को दे रहा है आपको। Pipe..., तो वो, *"चित्त ते करिया एकया"* यदि तीनों स्तर पर नहीं है, तो कैसे गुरु के emotions को देगा कोई व्यक्ति? Mentor का मतलब है, कि जैसे कि Tape Recorder पर सुनते है आकाशवाणी होना, आकाशवाणी..., आकाशवाणी means..., आकाशवाणी बोलते हैं? I don't know..., what is that radio पर रोज़ सुनते हैं government की वाणी? (विविध-भारती) Whatever it is..., point is कि government की वाणी चल रही है radio पर, आप चला रहे हो, आपको पता है कि government की वाणी आ रही है। ऊपर से अपनी tape चला दी। आवाज़ तो आ रही है कुछ न कुछ। ऊपर से..., government की नहीं चल रही, अपनी tape चल रही है। वो सब खराब हो गया, वो सब खत्म हो गया। हम किस लिए नलके से..., हो रहे थे? नलका मतलब pipe है, ठीक है?

Kṛṣṇa cannot make you touch Kṛṣṇa...!

Kṛṣṇa cannot make you touch Kṛṣṇa! कृष्ण की सबसे बड़ी कृपा अन्त में जो भी हो जाती है, अंतिम कृपा, यह हमने बताया, कि वे कृपा-मूर्ति रूप के रूप में, स्वयं की मूर्ति के रूप में, हमारे को गुरु से जोड़ दें। यह कृष्ण की अंतिम कृपा है। फिर जो उस कृपा-मूर्ति की कृपा होती है, तब हम कृष्ण से जुड़ पाते हैं। Touching Kṛṣṇa!

"यस्य प्रसादाद् भगवत्-प्रसादो, यस्या प्रसादान् न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायन् स्तुवंस् तस्य यशस् त्रि-सन्ध्यं, वन्दे गुरोः श्रीचरणरविन्दम्।।"
(श्री गुर्वष्टिक ८ - श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर)

इस बात पर इतना दृढ़ विश्वास, कि *यस्य प्रसादाद् भगवत्-प्रसादो..., यस्या प्रसादान्... न गतिः कुतो..., अपि...*, यह मूल मंत्र है। जो जीवन में सुखी रहा है, रह रहा है, रहेगा, उसका मूल मंत्र यही है। और जीना..., इसको जीवन में जीना, यह व्यक्ति बोल नहीं सकता ऐसे, जो जी न रहा हो। मुँह से निकलेंगे नहीं शब्द।

मुझे कोई रुचि नहीं है, कि आप किस के शिष्य हो, किस के शिष्य नहीं हो। मुझे एक चीज़ में केवल रुचि होती है शुरु से - क्या आप किसी..., किसी महत् पुरुष के संरक्षण में हो कि नहीं हो। बस...! मेरी रुचि केवल इसमें है। मुझे मतलब नहीं है आप गदाधर परिवार हो, निताई हो, कोई भी परिवार हो, इसमें हमने क्या करना है? जहाँ मर्ज़ी दीक्षा लो। पर हाँ, किसी महत् पुरुष के संरक्षण में रहो। Otherwise you cannot touch Kṛṣṇa...

Another thing, बहुत महत्वपूर्ण बात -

It is not that you can have Kṛṣṇa...

बात समझिएगा..., सूक्ष्म बात। You cannot have Kṛṣṇa, you can get Kṛṣṇa..., मैं..., कैसे बोलेंगे you can have Kṛṣṇa? You can get Kṛṣṇa but you cannot have Kṛṣṇa... अपने प्रयास से you cannot have Kṛṣṇa, you can get Kṛṣṇa by the Blessings! *"यस्य प्रसादाद्..."*, You can get Kṛṣṇa. Kṛṣṇa bestows Mercy, you cannot acquire Kṛṣṇa. I can..., I can..., I can get..., I can have Kṛṣṇa. कैसे कृष्ण मिलेंगे? विनम्र रहकर। कैसे विनम्र रहेंगें? सारे भक्तों में अपने आप को, कौन से number पर मानना है? (last number पर) हाँ, second last जिस दिन मान लिया, उस दिन ego की मूर्ति हो गए। जैसे मान लो सत्तर (७०) भक्त हैं यहाँ पर, sixty ninth (६९th) number पर जिस दिन मान लिया अपने आपको, तो ego की मूर्ति बन गए तुम। सत्तरवें number पर हो, यह बात हमेशा याद रखना। अगर सात सौ (७००) भक्त हैं, तो six ninety eighth (६९८th) पर नहीं हो, six ninety nine (६९९) पर भी नहीं हो, seven hundered (७००) पर हो। पतित-पावन को भगवान् कृपा करेंगे, egoistic व्यक्ति को कृपा नहीं करेंगे भगवान्। यह तो मानना है - सबसे पतित हूँ। गुरु कितने प्रसन्न होंगे, यह तो मानता है पतित हूँ। *"आपना के हीन कोरि मानि"*, *"उत्तम..., आपना के हीन कोरि मानि"*, *उत्तम... आछे, परन्तु आपना के हीन कोरि मानि*, अपने को हीन मान रहा है।

एक और बात,

Only in human form of life you can touch Kṛṣṇa.

केवल मनुष्य जीवन में ही you can touch Kṛṣṇa..., क्यों? You know why? Because only मनुष्य जीवन में ही आप जान पाओगे, कि you can... have to touch Kṛṣṇa. नहीं तो कैसे जानोगे I have to touch Kṛṣṇa! पशु है वो किसको touch कर रहा है? Patterns..., मनुष्य किस को touch कर रहा है? अगर अपने patterns को, तो वह क्या है? पशु...

"आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानः।।"

(महाभारत, हितोपदेश प्रस्ताविक २५)

"सामान्य"- सामान्य मतलब कैसे सामान्य? Patterns को जो touch करता है, वो पशु है। अपने thought process को touch करना मतलब, पशु...। गुरु के thought process को, गौरांग को..., वो दिव्य स्तर ही अलग है बिल्कुल। समझ नहीं आएगा हमेशा। हमेशा क्या..., आएगा ही नहीं वैसे समझ।

"याँर चित्ते कृष्ण प्रेम करये उदय।
ताँर वाक्य, क्रिया, मुदा विज्ञेह ना बुझय।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला २३.३९)

वो बुद्धि, मन, वाणी के परे है गुरु तत्व। कार्यकलाप, क्रिया कलाप वो समझ नहीं आ सकता। बुद्धि लगाए, की गए। एक अपराध हुआ, गए...।

अब बोलें एक अपराध, इतनी सेवा करी, एक अपराध हो गया, गए तो गए..., ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए यह जो..., यह जो महत् पुरुष, यह जो भागवत् पुरुष होते हैं न, यह Supersoul of SUPERSOUL होते हैं। यह परमात्मा के परमात्मा होते हैं। मालूम है? "गौर-प्रिय-जन", यह परमात्मा के परमात्मा हैं। कितना भी, कुछ भी किया हो, यह भागवत् पुरुष आग के समान हैं। आग..., एक दम आग...।

खुश रहने के लिए क्या करना है?

Soul has to touch Kṛṣṇa !!!

और..., मैं और कोशिश करता हूँ सरल करने की। यह सब क्या है सब मिला के? Spirit..., Subtle..., Gross..., ठीक है? सूक्ष्म, स्थूल और चिन्मय। अब हम Happiness किसको मानते हैं? कि, मन की मुराद मतलब, subtle touching gross, subtle touching subtle, इसको हम Happiness की संज्ञा देते हैं। Lable देते हो न..., किसको? Subtle मतलब मन के concept, जैसे मान लो पत्नी ने मेरी बात मान ली, तो मतलब subtle touching gross, या मेरे हिसाब से कार्य हो गया, ऐसे ही होना चाहिए, तो subtle touching subtle..., जबकि Happiness is something else... It is soul touching Kṛṣṇa. Gross और subtle है ही नहीं कुछ भी। Happiness का मतलब एक है - "Soul touching Kṛṣṇa", इसमें कहाँ gross और कहाँ subtle? कहाँ सूक्ष्म और कहाँ स्थूल? सोचिए न, हमारे मन में कितनी complexities हैं। हम क्या-क्या conceptions of happiness बनाकर जीते रहते हैं। जीवन बर्बाद करते रहतें हैं..., ऐसे क्यों, ऐसे क्यों नहीं..., इतना सरल जीवन है। Soul wants to touch Kṛṣṇa, *"यस्य प्रसादाद्..."*, सारी

किताबें बन्द। यह भी नहीं चाहिए, यह भी नहीं चाहिए, सब हो गया किताबों में पढ़ाई। क्या करनी है पढ़ाई? यही तो है - हमें आनन्द चाहिए, वो महत् कृपा से प्राप्त होगा। बस।

Become unkown to yourself... Become unkown to Amit. You, the soul, should become unkown to Amit. You are not Amit न..., are you? तो become unkown to Amit, this is the only thing you have to do...

भक्ति यह नहीं है कि वो बैठ गए छोड़ के सब..., निराकार। नैति, नैति, यह भी नहीं, यह भी नहीं। यह thought भी नहीं, वो thought भी नहीं। ऐसा नहीं है। वो thought वो thought! ठीक है। आप में से यदि किसी की जिज्ञासा हो, तो कर सकते हैं।

हरे कृष्ण !!